RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-07
July-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI:https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i07.036

वैश्विक पटल पर शाश्वत जीवन मूल्यों का प्रेरणास्रोत : भारत

डॉ. रतन कुमारी वर्मा

एसोशिएट प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, जगत तारन गर्ल्स पी.जी. कालेज, इलाहाबाद

वर्तमान समय में विश्व एक बहुत बड़े संकट से जूझ रहा है। वह संकट है– कोरोना वायरस कोविड–19 जिसने विश्व में एक महामारी का रूप ले लिया है। चीन के 'वुहान– शहर से निकलकर वायरस सम्पूर्ण विश्व में अपने पर पसार चुका है, दिन प्रतिदिन कितनी जिन्दगियाँ काल के गाल में समाने को मजबूर हो गई हैं। विश्व के कुछ ऐसे देश थे जो वैज्ञानिक तकनीकी, आर्थिक, शैक्षिक, परमाणु विज्ञान में सक्षमता हासिल करके अपने को विकसित देश की श्रेणी में ला खड़ा किये थे। कुछ विकासशील देशों की स्थिति में थे तो कुछ अभी विकास की राह पर आगे बढ़ने की जद्दोजहद कर रहे थे। भारत का हमेशा यह विश्वास रहा है कि सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा आज चरितार्थ हो रही है। जब हम विकसित, विकासशील एवं अविकसित राष्ट्र की अवधारणा को छोड़कर सभी राष्ट्र को एक समान मानते हुए, उनमें रहने वाले प्राणी मात्र के कल्याण की बात को सोचेंगे, उनमें जीवन के हित के लिए कार्य करेंगें, तभी मानवता बचेगी, तभी देश बचेंगे। हमें एक–दूसरे के प्रति परोपकार, दया, प्रेम की भावना से आगे आना चाहिए और सभी प्राणियों के जीवन की रक्षा के लिए उत्कृष्ट मानवमूल्यों का परिचय देना चाहिए। ऐसे समय में आवश्यकता है कि सभी के जीवन की रक्षा के लिए प्रत्येक प्रकार से हम उनकी सहायता करें। सबसे पहले तो हम इस बीमारी से बचाव के लिए जागरूकता लायें, व्यवहार में जीवन मूल्यों में परिवर्तन लायें। हाथ जोड़कर अभिवादन करना, नमस्ते करना, बड़ों के प्रति सम्मान प्रकट करने का विश्व में सर्वोत्तम तरीका समझा जा रहा है। गले मिलना; हाथ मिलाना, हाथ चूमना जैसी संस्कृति से इस बीमारी से संक्रमण बढ़ रहा है। आज सम्पूर्ण विश्व भारतीय जीवन मूल्यों को अपनाने पर विवश है। इस समय प्रत्येक व्यक्ति को बीमारी से बचाव के लिए अपना काम स्वयं करना पड़ रहा है। महात्मा गाँधी ने 150 वर्ष पूर्व पहले ही सबको यह शिक्षा दी थी कि प्रत्येक व्यक्ति को काम का सम्मान करना चाहिए। अपना काम स्वयं करना चाहिए। कार्य की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। वर्तमान परिस्थिति में सबके जीवन की रक्षा के लिए अनिवार्य हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति अपना काम स्वयं करे। अपनी दिनचर्या का प्रत्येक काम, सफाई, शौचालय साफ करना, बार–बार हाथ धोना सभी क्रियायें आज जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। विश्व के सबसे विकसित राष्ट्र अमेरिका, इटली, फ्रांस, इंग्लैंड में आज हाहाकार मचा हुआ है। भारतीय जीवन मूल्यों का पालन करके हम बीमारी के संक्रमण से मानव का बचाव कर सकते है। लोगों का जीवन बचाने में सहायक हो सकते हैं। यही सबसे बड़ी मानवता है। यह बहुत अच्छा अवसर है कि जब भारत अपनी सांस्कृतिक, विशिष्टता, जीवन मूल्यों का विश्व में प्रसार कर सकता है। आज विश्व को इसकी जरूरत भी है। और जब जरूरत हो, बात उस समय कही जाये तो और प्रभावी ढंग से सबको समझ में आती है। इसलिए वैश्विक स्तर पर जीवन मूल्यों की रक्षा करने में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भारतीय जीवन मूल्यों की आधारशिला भारतीय समाज के उन्नायकों के विचारों में देखी जा सकती है। जिसमें तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना कर रामराज्य का मार्ग प्रशस्त किया। रामचरित मानस मानवमूल्यों का आगार है, जहाँ से आप यह सीख सकते है कि समाज में कैसे सामंजस्य बनाया जाय। बड़े छोटे का आदर, प्रेम, सत्कार सभी कुछ रामचरितमानस में भरा पड़ा है। हम राम के चरित्र से आज भी सीख ले सकते हैं। जब तक हमारे अन्दर त्याग, समर्पण, उदारता, परोपकार की भावना नहीं होगी, हम समाज में मनुष्य के रूप में अपनी उपयोगिता सिद्ध नहीं कर पायेंगे।

महात्मा गाँधी, कबीर का जीवन एवं साहित्य, सिद्धान्त विश्व के लिए मिसाल है, जहाँ से हम जीवन जीने की कला को सीख सकते हैं। महात्मा गाँधी के विचारों से सम्पूर्ण विश्व प्रकाशित है। ''गाँधी विचार तत्व ज्ञान है जो मानव जीवन का एक समग्र जीवन दर्शन है, इसमें गोता लगाकर मोतियों को इकट्ठा किया गया है और कंकड़–पत्थर को निकालकर फेंक दिया गया है। जिसको प्राप्त करने के लिए हर राष्ट्र और राष्ट्र का एक–एक नागरिक बेचैन है। इसमें गरीबी रक्तपात, आतंकवाद, महायुद्ध आदि जैसे दुर्गुण नहीं हैं। इसको उच्छेदित करने के सारे प्रयत्न असफल सिद्ध होंगे।''[1] गाँधी का व्यक्तित्व गाँधी का विचार, दर्शन की नींव मजबूत भारतीय नैतिक मूल्यों पर आधारित है, जिन मूल्यों में विश्व में शिक्षा देने की ताकत है। ''गाँधी जी भारत ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए बहुमूल्य उपलब्धि हैं। हमें उन्हें और उनके विचारों को सहेजने का उपक्रम करते रहना होगा। अहिंसा को हथियार बनाकर उसके अचूक प्रयोग करने वाले गाँधी ने दुनिया के लिए सपना देखा था, राम राज्य की कल्पना की थी। गाँधी की अहिंसा और सत्य की ताकत दुनिया ने देखी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

और उस पर गर्व किया।''[2] इतिहासकार लेखक रामचंद्र गुहा के अनुसार– गाँधी जी के चार सिद्धान्त आज भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में प्रासंगिक हैं। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सत्याग्रह। सत्याग्रह और सर्वोदय का सिद्धान्त सभी जन का कल्याण करता है। सत्याग्रह का अर्थ है सत्य के प्रति दृढ़ होना। यह सत्य के मार्ग से सत्य तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करता है। महान लक्ष्यों तक पहुँचाता है। सर्वोदय का अर्थ है– सभी का उत्थान।

आज इस महामारी के संकट में सबसे ज्यादा चिंता करने वाली बात है सभी का उत्थान, सभी के जीवन की रक्षा का प्रयत्न। इस महामारी से पूरे विश्व में सबसे अधिक पीड़ा, परेशानी मजदूर वर्ग को उठानी पड़ रही है। भारत में भी और विदेशों में भी सरकारें मनुष्य के जीवन की रक्षा का बहुत प्रयत्न कर रही हैं लेकिन साधन कम पड़ जा रहे हैं। भारत ने बड़ी ही उदारता का परिचय देते हुए ऐसे संकट के दौर में भी अमेरिका को दवाईयों का निर्यात करके सहायता की है। यह गाँधी जी के ही विचार हैं कि हमें संकट के वक्त मानवता की मदद करनी चाहिए। सभी धर्मो का सार है मानवता के कल्याण के लिए कार्य करना। गाँधी जी का दर्शन इन कल्याणकारी योजनाओं, कार्यो का खजाना है जो आज इस घड़ी में भी हमारा सम्बल बन रहा है। गाँधी जी का जीवन सत्य की प्रयोगशाला है। ''गाँधी जी के विचार भौगोलिक सीमाओं से मर्यादित नहीं हैं। यह तो समस्त जगत के मानवीय मूल्यों को निर्दिष्ट करते हैं।''[3] सत्य, अहिंसा एवं प्रेम की त्रिगुणात्मक शक्ति ही सार्वभौमिक मूल्य की संरचना करती है। यही मनुष्य को उदार, सुसंस्कृत एवं समृद्ध बनाती है। गाँधी जी मानवीय मूल्यों की विशेषता को बताते हुए लिखते हैं– ''मनुष्य न तो सिर्फ बुद्धि है, न पशु शरीर, न ही मात्र हृदय अथवा आत्मा। एक उपयुक्त तथा सस्वरित तीनों का संयोग, मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के लिए अपेक्षित है।''[4] गाँधी जी सदा मूल्यों के अन्वेषक थे। समय, काल, परिस्थिति के अनुसार सार्वभौमिक मूल्यों का अन्वेषण एवं उनका प्रयोग उनके लिए सदैव अभीप्सित रखा। ''गाँधी जी ने मूल्यों की अनवरत शोध एवं साधना की। हृदय की अतल गहराइयों में उसकी अनुभूति की। समय व स्थान के परिप्रेक्ष्य में उनकी व्याख्या व पुनर्व्याख्या करके आदर्श व्यक्ति, समाज व राज्य तथा विश्व बन्धुत्व के निर्माण के लिए कुछ निश्चित कर्म–सिद्धान्तों व मूल्यों का निरूपण किया और अपने जीवन तथा समाज के स्तर पर व्यापक प्रयोग किया। यही विश्वास के प्रति श्रद्धात्मक पहुँच है जिसके आधार पर सर्वधर्मसमभाव के सिद्धान्त को माना जा सकता है।''[5] 'अहिंसा परमो धर्मः'। ये वचन हमें समस्त विहित अर्थ और काम की कुन्जी प्रदान करते है।''[6] ''ये मठवासियों के ही धर्म नहीं हैं, अदालतों, सभाओं व अन्य व्यवहारों में भी यह सनातन सिद्धान्त लागू हो सकते हैं।''[7] आज से 150 वर्ष पूर्व महात्मा गाँधी ने विश्व परिभ्रमण करके समाज की जिन सच्चाइयों का पर्दाफाश किया था, इतने वर्षो बाद भी आज वही रूप दिखाई देता है। आजादी मिलने के बाद भी हम आजाद नहीं हुए हैं। क्योंकि हम अपने अन्दर के मनुष्य को मानवता को जगाने में कामयाब नहीं हुए है। विश्व में आज इसी मानवता की सख्त जरूरत है। सरदार वल्लभ भाई पटेल को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था– ''आज चारों तरफ हिंसा का तांडव नृत्य हो रहा है, हिंसा का साम्राज्य फैला है, झूठ, फरेब, असत्य का बोलबाला है। अहिंसा के नाम पर हिंसा होता है। धर्म के नाम पर अधर्म होता है।''[8] मानवीय मूल्यों में नैतिक अवमूल्यन का सबसे प्रमुख कारण है– ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लोभ एवं अहंकार की अधिकता, आवश्यकताओं का अनन्तीकरण, विलासिता, प्राकृतिक संसाधनों का क्रूरतापूर्वक विदोहन आदि। सभी धर्मो में इसे पाप कहा गया है। इन मानवीय दुर्बलताओं से दूर रहने के लिए मन की शक्ति पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए आत्म संयम, आत्मानुशासन की आवश्यकता पड़ती है। ''आत्मशुद्धि, आत्म संयम या आत्मानुशासन ''स्व'' को समृद्ध करने का अनुशासन है। मनुष्य का स्वभाव अपने ''स्व'' को तभी पायेगा जब वह यह अनुभव कर ले कि मनुष्य होने के लिए उसे पाशविक अथवा पशुवत् होने से रूकना पड़ेगा।''[9] मनुष्य में देवत्त्व एवं दानव दोनों की शक्तियाँ निहित हैं। लेकिन गाँधी जी का विश्वास है कि ''हममें देवत्त्व की शक्तियाँ अनन्त हैं।''[10] जिसे वेदान्तियों ने आत्मा (स्व) कहा है। वह सबमें एक सी है। दूसरों में सुप्तावस्था में रहती है। अगर कोई भी व्यक्ति प्रयास करे तो उसे समान अनुभव होगा।''[11] मानवता की सबसे बड़ी व्याख्या यह है कि मन, बचन और कर्म तीनों में एकरूपता होनी चाहिए। जब मनुष्य अपने स्वभाव में इसको अपना लेता है। तब उसके व्यक्तित्व का संवर्धन अपने आप हो जाता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने इन तीनों रूपों की व्याख्या की है–

''सद्भावे साधुभावे च सदित्येतप्रयुज्यते।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थयुज्यते।।''[12]

अहिंसा का वास्तविक अर्थ है– प्राणी मात्र के लिए प्रेम का अभ्युदय। गाँधी जी के अनुसार– ''प्रेम का नियम है, जानबूझकर या चैतन्य रूप से कष्ट सहना जैसा कि एक माँ अपने बच्चे के लिए अपार कष्ट सहती है, वह यहाँ पर अनजाने में प्रेम का अनुगमन करती है।''[13] जो प्रेम देते हैं, उनके सथ प्रेम करना सहज मानवीय वृत्ति है, किसी अनुशासन का प्रतीक नहीं। अतः मनुष्य की अहिंसा का परिचय तभी मिल सकेगा जब उसका प्रेम दूसरे व्यक्ति के प्रेम या द्वेष से प्रभावित न हो।''[14] वह प्रेम किस काम का यदि वह तब तक बना रहे जब तक मित्र का आप पर विश्वास हो।''[15] सच्चा प्रेम असंख्य शरीर में निवास करने वाले समस्त जीवन की एकता की आवश्यक अनुभूति में है।''[16] कहा गया है– ''आत्मानुग्रहाभावै विभूतानुग्रहः प्रयोजनम्''। अर्थात् अहिंसक व्यक्ति का अपना कोई व्यक्तिगत प्रयोजन नहीं होता, उसका तो एकमात्र प्रयोजन लोकानुग्रह ही है। आज इस संकट की

RRIJM 2015, All Rights Reserved

घड़ी में इसी अनुग्रह की आवश्यकता है। परस्पर प्रेम, शान्ति, सहिष्णुता, सौहार्द, भ्रातृत्व, प्रेमभाव के लिए दुनिया भूखी है। आज पूँजीवाद या समाजवाद के द्वारा किसी राष्ट्र समस्या का समाधान नहीं ढूँढा जा सकता है बल्कि मानवतावादी विचारधारा को अपनाकर सबके कल्याण की बात की जा सकती है।

स्वतन्त्रता, समानता व बन्धुत्व का वास्तविक स्रोत प्रेम है। इस प्रेम के द्वारा ही संसार में सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। ''जो ईश्वर की 'सीमाहीन निःस्वार्थ सेवा' ईश्वर को प्राप्त करता है और उनके सारे सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक कार्यो को अन्तिम रूप देता है। इसी उद्देश्य से निर्देशित होना चाहिए कि ईश्वर के दर्शन को पाया जाय।''[17] ऐसा तभी किया जा सकता है जब सबकी सेवा की जाये।''[18] जब मनुष्य के अन्दर सबकी सेवा का भाव आ जाता है तब वह महात्मा बन जाता है। गाँधी जी के दर्शन एवं उनके विचारों के कारण ही उन्हें महात्मा कहा गया। गाँधी जी ईश्वर को 'सच्चिदानन्द' कहते हैं– सत्–चित्त–आनन्द। 'सत्' का अर्थ सत्य, प्रेम या सेवा। 'चित' इस सत्य का ज्ञान है और इस सत्य की प्राप्ति आनन्द। वे उस सत्य को मानते हैं, जो शुद्ध है, तथा अकलुश चेतना है। यही जीवन का सार है। यह अनन्त है।''[19] गाँधी जी का ईश्वर (सत्य) ''परम मानव'' है। इस सत्य में दुनियाभर के सभी संविधानों का 'सत' (Esence) है, संयुक्त राष्ट्र संघ (यू. एन. ओ.) का चार्टर है। वह एक ऐसे आदर्श विश्व नागरिक का प्रतिरूप है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी राष्ट्रों के द्वारा अपनाये जाने योग्य है।

गाँधी जी के विचार सत्य और अहिंसा पर आधारित मानव जीवन, आदर्शो एवं मूल्यों की एक स्पष्ट अवधारणा तथा उसकी संरचना हैं और इन्हीं मूल्यों को क्रियान्वित करने की एक विशिष्ट कार्यपद्धति है। गाँधी जी के मूल्य दर्शन में एकादश व्रत मुख्य हैं, जिन्हें विनोवाभावे जी ने पद्यबद्ध किया।''[20]

सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम, अस्वाद सर्वत्रभयवर्जनम्।
सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी स्पर्शभावना।
हीं एकादश सेवावी नम्रत्वे दृढ़निश्चये।

भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्य ऐसे हैं जो विश्व की धरोहर है। भारतीय ऋषियों, मुनियों, संत महात्माओं के विचारों को अपनाकर आध्यात्मिक जीवन दर्शन को आत्मसात कर विश्व एक सुन्दर विश्व की संरचना में सहायक हो सकता है। भारतीय ऋषी मुनियों की यह प्रार्थना है–

असतो मा सद्गमयः।
तमसो मा ज्योतिर्गमयः।
हिंसाया माम् अहिंसाम् गमयः।
मृत्योर्माम् अमृतम्गमयः।

भारतीय जीवन दर्शन 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना पर आधारित है। जिसमें समस्त मनुष्य का कल्याण हो। 'सर्वे सन्तु निरामया' सभी निरोगी हों।'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु', मा कश्चित् दुःख भागभवेत्। संसार का कोई भी प्राणी दुख का भागी न हो। सत्य, अहिंसा, प्रेम, स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृभाव के साथ–साथ हमारा यह प्रयास हो कि सभी निरोगी हों, स्वस्थ हों। आज विश्व स्वास्थ्य के संकट से जूझ रहा है। सभी के स्वस्थ स्वास्थ्य तथा जीवन रक्षण को ध्यान मे रखते हुए भारत विश्व में जीवन मूल्यों के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाने में सक्षम है। आज भारत अपनी इस संस्कृति का परिचय विश्व को दे भी रहा है।

सन्दर्भ सूची

[1]. द माइण्ड आफ महात्मा गाँधी, 1967, पृ0 460
[2]. सं0 ज्ञानेन्द्र रावत, व्यक्तित्व विचार और गाँधीवाद, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ0 10
[3]. यंग इण्डिया, 11.08.1920
[4]. हरिजन, 08.03.1937, पृ0 104
[5]. हरिजन, 13.03.1937
[6]. हरिजन, 06.04.1934
[7]. सं0–सुमन श्रीराम नाथ, अहिंसा और सत्य, उत्तर प्रदेश गाँधी स्मारक निधि, वाराणसी, गाँधी साहित्य प्रकाशन अक्टूबर 1965, पृ0 668
[8]. बापू के पत्र सरदार वल्लभ भाई पटेल के नाम 25.12.1946
[9]. हरिजन, 08.10.1937, पृ0 282
[10].आत्मकथा, 1966, पृ0 238
[11].नवजीवन, 25.05.1924, पृ0 306
[12].गीता, अध्याय 17–26
[13].द ला ऑफ लव, पृ0 6
[14].गाँधी इन सर्च आफ सुप्रीम वाल्यूम 1, पृ0 1 एवं 6
[15].हरिजन, 03.03.1946, पृ0 28

RRIJM 2015, All Rights Reserved

[16].बापू की चिट्ठीः मीरा, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद 1946, पृ0—159
[17].महादेव देसाई की डायरी, 1953 पृ0 184
[18].हरिजन, 29.08.1936, पृ0 226
[19].हरिजन, 22.06.1947, पृ0 200
[20].सं0— सुमन श्री रामनाथ, अहिंसा और सत्य, उत्तर प्रदेश स्मारक निधि, वाराणसी, गाँधी साहित्य प्रकाशन, अक्टूबर 1965

RRIJM 2015, All Rights Reserved